



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता
 युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव
 तस्यैव कुरुक्षेत्रे समवेता
 युयुत्सवः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible][illegible]

[illegible]

म ४

[illegible]

नयधर्मगणविधिं सातदायागमा श्रीविदधति यनमीरावसूताविगया ॥ निर्वन्धानादनुयान
दतिद्यतनवीधानवाययधका श्रीमद्वीजयनिजगदखिलतना रावनिशिवदवी ॥ ३ ॥ कोला
दिमिवतीव्रवीद्यनमाविष्मन्ति कोसर्वग सीसानार्तु वससुहृत्तजगत्वा नुयरावात्मना ॥ यादवी
यन रावयाकनयुगमयनगसुधता श्रीराधसुखदावियति रुवगसानाख्य गकि दयश्रीध
गान्द तमुनमास्यामकवरयकपिअकागमायसीहा नानायायाविधेयादधति कवयुगेन
तमालादि वृक्षा ॥ नानादूषयदकाविविधरयदवीधानवाययधका रासादवीषसिद्ध
जयतिजयकवीगायसो ~~सि~~ न्यायवर्ग ॥ ५ ॥ ॥ यासात्ककामिनवि सामसूताख्यता

सी निर्वन्धानादनुयानमहार्थमहात्कला ली ॥ विद्वत्तजगिबगकि मूगयमाती श्रीमगली
नितिमहार्थयुगियुलोमि ॥ एकागकियसवति यनाद्यामदका नद्याया वकी वीरु गगतसदग्वि
गिर्गुजसमग ॥ द्यामाकावाकलितगगतानदरावायवर्ग रायागीवाविषमविषयदवि
कीनमामि ॥ गणगरीववदरी वद्वीगकिरिः सद ॥ अवातावयामि वदका नमामि
कीलिकानुव ॥ मूसिताजादिवा म्माया दकनाथमग्नानक ॥ पूजावक्रसन्निधानं युगमासि
मदगुवी ॥ यासात्ककामिन्यादि ॥ सर्वदंगधिनार्थजगदखिलतनारैववाविष्मन्ति राणी
तात्मदुसकलगगुगु ॥ आगिनीवकुष्ठसु ॥ आनदाविष्मन्तार्थवन्दसूचिवः यदुगुनीति

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दक्षिणानि ॥ वाचनकालेनाम्
 मध्यमदिग्दर्शनिकानर्थः ॥
 पुनस्तथैव द्वादशतथैव
 नमस्तु पुनस्तथैव द्वादश
 फीतयावत्तद्वानर्थः ॥ अत्र
 मानस्यैव कथं वा ज्ञानं तया
 कं वेदयद्वावनासीद्वानिदि
 वकीतयव ॥ एतन्निवर्तमानं
 लोको ॥ उक्तं ज्ञानं तदर्थं ॥
 इत्युक्तं ॥ गङ्गाकातक ॥
 पुनः पुनः पुनः ॥ तस्यामाला
 मन्तुन पुनः पुनः ॥ ज्ञानवत्तदर्थः ॥
 पुनः पुनः पुनः ॥ ज्ञानवत्तदर्थः ॥
 पुनः पुनः पुनः ॥ ज्ञानवत्तदर्थः ॥
 पुनः पुनः पुनः ॥ ज्ञानवत्तदर्थः ॥

गणान्नादिनिधि ॥ १०॥
 नुं ५ मत्तार्थमत्तु सकल गाम्क
 तुल्यवर्धननादिदिपदवगा ४३
 द्वागावननरवत्तु ७ नुं ॥ १० ॥
 ५५ ४४ ४३ ४२ ४१ ४० ३९ ३८ ३७ ३६ ३५ ३४ ३३ ३२ ३१ ३० २९ २८ २७ २६ २५ २४ २३ २२ २१ २० १९ १८ १७ १६ १५ १४ १३ १२ ११ १० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १ ०

उपरी खनु पुगा मुविन ४ स्मि
 दंश ए सो दया ॥ ना द्वा धि
 सि ए मुकु ना नु व क सि धि न
 पुा पा द या नु अ स्म दो नी ना म
 नु सि धि न नु द्वि प द च ४ प द
 ४ ४ ४ री व नु स र्ध स वा नु द्वि
 न ४ स नु स र्ध वि ध य नि द ४ नु ॥

मनु ल द च को ॥ स्म ॥ ॥ ॥ ॥
 पु ४ स ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 य न म द ४ सा न द ४ ४ क र्सा न
 का ध ४ ॥ द्वि गी ४ ग य ४ व द न
 या न वि क ४ धा र्म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सा ग ॥ न य न म य नि ध ४ ॥ ॥ ॥
 व न नु ॥ वि व न नु ॥ ॥ ॥ ॥
 व ४ ॥ नि व द न ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

न का ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 गा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 य ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 व न नु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यस्य वने सप्तमि (गमकीने
 कोथराथी १ कोरा मरुले सम
 (सिधधी ३॥ किम नो १॥ धाये
 केरा कोराथी सो लयगमन स
 इति सिद्ध नद्वर्ष दधो मे
 वयमय ११ व कलजविदिक
 गिमय दुर्कोरो ॥ १ ॥
 यकिनी यकना गलु श्रीस
 श्रीगदवगा ॥ कुना विदम
 मस ग ११ धावे गगिनम ११
 वानि शुगाव नादिसमस्त या
 री ॥ ॥ विदवादि ॥ वक्रा ॥ धा
 दि ॥ उद्यव ॥ वगला ॥ विग
 कि ॥ यकिम ॥ उकन ॥ उर्द्धा
 कोरा ॥ मायास्तव ॥ श्रीसिव
 को ॥ मला माया ॥ निरव ॥
 दिक ॥ सिद्धि ले श्रीमस्तान
 विवस्तव ॥ आदि दाया सिद्ध
 कुरा श्रीधार्म्या वि (गवग
 १॥ मनुमु ॥ जाविशान १॥
 सगिप ० नदवग १॥ मकु
 नो नादिशान १॥ दव ॥ मदि
 वि (गवग १॥ ११ विगलादि
 गिगन ॥ धा ११ नुप ११ नकोम

स ॥ धद ग ॥ धा ११ धन ॥ विधा
 ली ननद किनी ॥ कलुम र्द्धिग
 सध्वं ॥ कर्धतु गिवर्मगदी ॥
 ॥ ॥ सक्त ११ सक्तु निवग नधि
 कनिनि वि धस याथी कथा ॥ नाजा
 नध्या वि या लयनुव सुधाधम
 हिगा सर्वदा ॥ काले ॥ स
 कति विवि नो ११ लमूच ११ सकुच
 जायुधदा ॥ मय कर्धनद
 दि धीधव सुदर काथी ११ मीदा
 ११ सदा ॥ ॥ याथी ध्यादि ॥
 ॥ ॥ ॥ अशर्मिधादि ॥
 ॥ दवकले ग मनि म्ना गीधा
 दा ॥ ॥ वाचन जलन म्ना
 गोर्वा दानि वन्दन दधयदा
 ना ॥ कुमाना र्धन ॥ नकानक ॥
 ॥ अश्वद्वर्ग गरी ॥ न्यास १॥ अ
 स्तन क ११ वि सङ्गोनी ॥ कालस
 रिधक ॥ वन्दन सिद्धन ॥ मा
 रुनी ॥ से ११ ॥ धीव सुय का
 का दूका ११ ॥ ११ ॥ य ११ क
 उया कोरा ॥ वि य ॥ कालसङ्गा
 य ॥ ॥ ॥ कुरा द्वाय ॥

नः स्वर्गु विद्य ॥ कः तु तावत्
 वती ॥ नानाविधैकनयनिष्ठा
 याये ॥ यन्कोपी न कथं यस्मिन् ॥
 गीत श्री ह्ययम् ॥
 कुमानि दृजा भ्याय ॥
 सिधुमूढ ज्ञाय ॥
 समय काय ॥
 गात्रादि ॥
 धना उद्धिस्त त स्म विविध
 वी दृजा ॥
 धन सिद्धि को नि याप विधाठ वि
 वि द्याय ॥ ३३ ॥

पूर्व
 यधि

यजगवर्ग
 प्रमथ धर्म

उत्तर
 (गामय)

मध्य
 कीर्त

दक्षिण
 (गामय)

याग्य
 दृष्ट

श्री श्रुति याज्ञत नूजाय स्वाहा ॥ श्री जलात्मन महिमाय स्वाहा ॥ श्री तज्ज्ञानन रुनाय ॥ श्री क
 यात्मनर्ग कनाय ॥ श्री ० गगनात्मनर्ग ले प्रनाय ॥ श्री ती कय सुश्रुय ॥ श्री साम
 तन सामाय ॥ श्री क्षीणात्मनर्ग निवाय ॥ श्री कानकाय ॥ श्री रकाय ॥ श्री क
 कानिवा ॥ श्री प्रताय कव ॥ श्री धूमिचर्त ॥ श्री कनात्यो ॥ श्री क
 ॥

१ काल त्वत्पुनरीकृष्ट जा मीवन समर्पित ॥ ग्राह्य सुल चर्त नव तफ नारि दिष्ट वय ॥
 कान्या क जीन सनिर्व लवी चर्त जा ॥ एत ४ बहिः समालाय प्रसादी समर्थ र व ॥
 ॥

विचिंतये सकथां कृत्वा मूलमर्तुन तत्त्ववि० ॥ यसादासिद्धिमनुर्त्ता मयमृषुविना
गर्भं ॥ विद्धिसिद्धिमनुसिद्धि वग्धसोराग्धदायकं ॥ कालवचनकी (गुह्य) रं नवन
विनिर्मातं ॥

१ ज्ञांती वीवदु काय स्वाहा ॥ यवालायवाल् वदू कं मधुना गतिवाहितं ॥ तिस्रुल
रुसुदं चापु वंकावियन मासुतं ॥ मूकता ॥ ज्ञांती वीवदु काय स्वाहा ॥ यवालायवाल्
स्वाहा ॥ विष्णु गीर्त्तिसुसुक्तं कामना जयनेष्टि ॥ वासाङ्ग कर्त्तु ला कर्मा १ स

विष्णुविना गित स्वाहा ॥ तच्छा ॥ ॥ ज्ञांती ॥ श्री तिस्रुल काय कृता विधा य स्वाहा ॥ मधवपुं
खरुसुतं यथा ज्ञायनिसुम्भो गी ॥ जीवकामि विद्याय दं गुया लन मासुतं ॥ युवाते को ॥
२ श्री असिर्गंगकाय ज्ञांती ॥ श्री विष्णु काय स्वाहा ॥ यथा ग असि ता कृत्वा स्वाहा वि मे
लानुत ॥ त्रुडी मूकता विद्या वृक्ता ग किन मासुतं ॥ कठगुडि ॥ १ ॥ २ केतुके नैव वा
कृत्वा ये नृजांती मल नूडी स्वाहा ॥ वागागस्य विवा कृत्वा चर्विका गुडिनी कृता ॥ श्री गयकी
त्रिभुवा गान्ति मादगुनी न मासुतं ॥ रायमल ॥ २ ॥ २ श्री वामु अक्षय को को को मानि

This detail shows a highly textured and expressive section of the painting. It features bold, impasto applications of reddish-brown and ochre pigments, creating a sense of depth and movement. The background is a mix of dark, earthy tones, suggesting a complex scene or a dense crowd of figures.

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः॥

॥ दशमोऽध्यायः ॥

महानमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अथ यद्विनाशो विधिः ॥

३५ मदी॥ मादृणा चार

मूलमन्त्राभावाद्वा

॥ साक्षात् ॥

मृगज्ञानं रुद्रज्ञानं ॥

विष्णुनाम। श्रीमद्भक्त

आन वाहुनिनका

वन्दनस्तुतम्

गीवृदाव

ॐ ह्रीं नमो भगवते ॥

आलयासङ्गः॥

दागुद्धि॥ साध्याना

सङ्ख्यदिधावरसनङ्ग

विदुष्य ॥

निरद्वन्द्वतया ॥ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

नमो नमो नमो नमो नमो नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ आर्षिगङ्गा नमः ॥

वह सध जमने दु

॥ अथ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १७७७ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सिनाय मसुदा अहटाने

कालागुरु मधनिद्रा

अहो॥ धनवदुसकाभाया

॥०॥ सती न दुःखा सदा ॥

वर्णमाला

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२ विद्यया दकी ॥

卷之四

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विष्णुवादाः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सिद्धिः

श्री कृष्ण विद्यागोविन्द

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

२५३

卷之四

॥ राजन ॥

इस मन्त्र का अर्थ है ॥

नृपतिवत्पुत्रोऽप्युत्तमः

(७) द्यामकातिमारीतिदीन

का लिकान्द्र दिनी सिद्धिवादि

दधुनिदन्कालीआलिधनी

दत्तकालीहाडिआनि नर्कका

विश्वस्य विष्णोः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

五

॥ महाप्रतिष्ठापनमुद्रा ॥

卷之四

गायतु रयि विष्णवे नमः नीधवः
 वि॥ वृक्षादिदि॥ ननु धवः २२
 । अममधुलेया॥ मनु धवः २३
 सिले म्मानन्देनार्काद्यादि॥
 अर्धानमनुधव॥ दंभीममन
 वगीणि॥ सिंहासेनयादृकी॥
 । उग्रवीजे सधवः २४
 । यदृद्राणि॥ मनु धवः २५
 । यदृजकिनी॥ मनु धवः २६
 । यदृयाणिनी॥ मनु धवः २७
 विद्युद्यगासनयादृकी॥
 वगलोमूखिमनुधव॥
 कामनयासनयादृकी॥
 शिभिकिमनुधवः २८
 यच्चयगासनयादृकी॥
 विद्युन्मं गृध्रादृकी॥
 मलाजिवागनयादृकी॥
 उग्रकालीमनु धवः २९
 २३ अममधुलेयादृकी॥
 कालानमनावयादृकी॥
 नानर्कादिदि॥ दंभीममन
 विद्युन्मं गृध्रादृकी॥

गायतु रयि विष्णवे नमः नीधवः
 वि॥ वृक्षादिदि॥ ननु धवः २२
 । अममधुलेया॥ मनु धवः २३
 सिले म्मानन्देनार्काद्यादि॥
 अर्धानमनुधव॥ दंभीममन
 वगीणि॥ सिंहासेनयादृकी॥
 । उग्रवीजे सधवः २४
 । यदृद्राणि॥ मनु धवः २५
 । यदृजकिनी॥ मनु धवः २६
 । यदृयाणिनी॥ मनु धवः २७
 विद्युद्यगासनयादृकी॥
 वगलोमूखिमनुधव॥
 कामनयासनयादृकी॥
 शिभिकिमनुधवः २८
 यच्चयगासनयादृकी॥
 विद्युन्मं गृध्रादृकी॥
 मलाजिवागनयादृकी॥
 उग्रकालीमनु धवः २९
 २३ अममधुलेयादृकी॥
 कालानमनावयादृकी॥
 नानर्कादिदि॥ दंभीममन
 विद्युन्मं गृध्रादृकी॥

मूयनाधसरुजानीति ॥
 यत्नसद्गुणाधकद्वजाम्भ्याव
 कथयुजा गर्धनयायौ चक्र
 धूनर्का ॥ समय ॥ स्त्रीरथगा
 दि ॥ धर्मादिगामोक्तनयाक्र
 मयोविधादशनी ॥ दत्तासानसि
 जागयाया ॥

२ सीतिकाङ्गेवली ॥
 वलिध्यावकुम्भ ॥
 दयावर्जनदण्डुलिरादन
 की ० नयादर ॥ ७ ॥
 चतुर्विक्कावाचलपगसेका
 गानसुदिगयुजायाकाकुम्भ
 नसमूकावग ॥ विक्कावाचल
 दगजगलकीगे ॥ चायादीरथग
 ॥ ७ ॥

ॐ

विदु

ॐ

॥ विक्कावगसिधनवाय ॥
 दयासनवसि कवाय ॥
 क्रवनावकागवाय ॥ जाव
 खवमिठलकर्मठलभध ॥
 वसि कसकागानर्धकुम्भ ॥
 जायुजावलिकुम्भाट ॥
 दाउ २ नवाठि २ लीखन
 काये वगसिधजजामका
 हानग ॥
 रुधार्थयाय ॥
 पुननमहानयाय ॥
 नासयाय ॥
 पुं० पुं० कलवछपनायभूसा
 यरुट ॥
 पुं० पुं० कलवछपनायकनिख
 कायानिम ॥ ॥ पुं० पुं० पुं०
 प्रनामिका मेधमा गङ्गा
 प्री ० ककनयकुम्भ ॥

